



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 13 अंक 1

www.csir.res.in

जनवरी 2025

सीएसआईआर ने स्वदेशी रूप से विकसित की पैरासिटामोल दवा

डॉ. जितेंद्र सिंह, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पृथ्वी विज्ञान (स्वतंत्र प्रभार), एमओएस, पीएमओ, डीओपीटी, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन, परमाणु ऊर्जा, अंतरिक्ष राज्य मंत्री ने 4 जनवरी 2025 को डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग के 40वें स्थापना दिवस को संबोधित करते हुए, सीएसआईआर जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत

इस नवाचार का उद्देश्य पैरासिटामोल निर्माण में भारत को आत्मनिर्भर बनाना है ताकि आयातित सामग्री पर निर्भरता कम हो।

मंत्री महोदय ने विस्तार से बताया कि सीएसआईआर ने व्यापक रूप से इस्तेमाल की

उपयोग घरेलू स्तर पर सस्ती पैरासिटामोल का उत्पादन करने के लिए करेगा। वर्तमान में भारत विभिन्न देशों से पैरासिटामोल के लिए प्रमुख कच्चे माल का आयात करता है। इस प्रकार, सीएसआईआर की यह पहल न

केवल इस निर्भरता को संबोधित करती है, बल्कि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के "आत्मनिर्भर भारत" दृष्टिकोण के साथ भी संरेखित होती है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में डीएसआईआर के इतिहास और पिछले दशक में इसके योगदान को दोहराया और नवाचार को बढ़ाने और तकनीकी विकास को बढ़ावा देने के लिए उद्योग भागीदारों के साथ सहयोग पर ध्यान केंद्रित करने के अपने जनादेश को याद किया।

इस अवसर पर उन्होंने सीएसआईआर की स्थापना को भी याद किया, जो अनुसंधान के माध्यम से भारत की वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति के उद्देश्य से जुड़ा एक बहुत पुराना संगठन है।



सरकार से संबद्ध है, के द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित दवा "पैरासिटामोल" की घोषणा की, जिसका उपयोग आमतौर पर दर्द, बुखार आदि में किया जाता है। इस अवसर पर माननीय मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि

जाने वाली दर्द निवारक और बुखार कम करने वाली दवा पैरासिटामोल का उत्पादन करने के लिए स्वदेशी तकनीक विकसित की है। उन्होंने बताया कि कर्नाटक स्थित सत्य दीप्ति फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड इस सफलता का

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा मुंबई में इनोवेशन कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन

केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने 17 जनवरी को वर्चुअल मोड के माध्यम से मुंबई में भारत के अपनी तरह के पहले सीएसआईआर मेगा “इनोवेशन कॉम्प्लेक्स” का उद्घाटन किया और इसे स्टार्टअप्स और उद्योगजगत के हितधारकों को समर्पित किया।

यह इनोवेशन कॉम्प्लेक्स, नौ मंजिलों में फैला एक विशाल अत्याधुनिक परिसर है, जिसमें 24 “रेडी टू मूव” वाली इनक्यूबेशन प्रयोगशालाएं हैं, साथ ही नवोन्मेषी स्टार्टअप, एमएसएमई, उद्योग और सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के लिए सुसज्जित कार्यालय और नेटवर्किंग स्थान भी हैं। ये व्यापक सुविधाएं सीएसआईआर प्रयोगशालाओं, स्टार्टअप, एमएसएमई और उद्योग सहित हितधारकों को नियामक समर्थन और अनुपालन के लिए आवश्यक एसओपी-संचालित अध्ययनों के लिए उच्च-स्तरीय वैज्ञानिक अवसंरचना, विशेषज्ञता और नियामक सहायता प्रदान करेगी।

इस परिसर में नवीन स्टार्ट-अप्स, सीएसआईआर प्रयोगशालाओं, एमएसएमई, भारत और विदेश की डीप-टेक कंपनियों, सार्वजनिक-वित्त पोषित अनुसंधान संस्थानों और सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के साथ साझेदारी करने वाली कंपनियों के लिए तैयार विश्व स्तरीय इनक्यूबेशन प्रयोगशालाएं और आईपी/व्यवसाय विकास सहायता शामिल है।

इस अवसर पर डॉ. जितेंद्र सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह उद्घाटन तो बस शुरुआत है, हम भविष्य की संभावनाओं और

भारत की विकास गाथा में इस इनोवेशन कॉम्प्लेक्स के योगदान को लेकर उत्साहित हैं।

उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदृष्टि एवं मार्गदर्शन में भारत स्टार्ट-अप और नवाचार के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभर पाया है। उन्होंने इस परिसर के उद्घाटन को एक और ऐतिहासिक कदम बताया। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि हमें दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इकोसिस्टम होने पर गर्व है, जिसमें 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं जो

भारत की उद्यमशीलता की भावना के प्रमाण हैं। यह उल्लेखनीय वृद्धि युवाओं को सशक्त बनाने और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए हमारी सरकार द्वारा शुरू की गई परिवर्तनकारी पहलों और नीतियों का प्रतिबिंब है। माननीय मंत्री महोदय मंत्री ने यह भी कहा कि सीएसआईआर इनोवेशन कॉम्प्लेक्स, मुंबई, भारत की स्टार्ट-अप यात्रा में एक महत्वपूर्ण क्षण है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि इनोवेशन कॉम्प्लेक्स को इनक्यूबेशन और व्यावसायिक स्थान प्रदान करने के लिए अभिकल्पित किया गया है, जिससे स्टार्ट-अप, एमएसएमई और उद्योगजगत के हितधारकों को सीएसआईआर के अनुसंधानकर्ताओं और नवप्रवर्तकों के नेटवर्क के साथ सहयोग करने में मदद मिलेगी।



यह अत्याधुनिक विज्ञान और वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने के लिए इसके इस्तेमाल के बीच एक सेतु का काम करेगा, जिससे आत्मनिर्भर भारत के विजन में योगदान मिलेगा।

उन्होंने इनोवेशन कॉम्प्लेक्स को सीएसआईआर के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बताया, जो भारत के नवाचार परिदृश्य में एक बड़ी उपलब्धि का सूचक है और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में वैश्विक अग्रणी के रूप में देश की स्थिति को मजबूत करेगा। डॉ. जितेंद्र सिंह ने स्टार्ट-अप, एमएसएमई और सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के लिए महत्वपूर्ण परिणाम आधारित जरूरतों (लैब से नियामक और नियामक से उद्योग डोमेन तक) को बढ़ावा देने के लिए अभिकल्पित किए गए।

उच्च-स्तरीय वैज्ञानिक इंफ्रास्ट्रक्चर को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया और कहा कि यह तेजी से तकनीक-हस्तांतरण से जुड़ी प्रक्रियाओं को उत्प्रेरित करने में सहयोग प्रदान करेगा। उद्योग और स्टार्ट-अप को जानकारी देते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि यह परिसर स्वास्थ्य सेवा (फार्मा, बायोफार्मा, मेडटेक), रसायन, सामग्री, ऊर्जा और सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के लिए रुचि के अन्य प्रासंगिक क्षेत्रों जैसे प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में समर्थन, सहयोग और साझेदारी के लिए एक नवाचार और इनक्यूबेशन केंद्र के रूप में कार्य करेगा।

अपने भाषण का समापन करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि हम भविष्य की संभावनाओं और इस इनोवेशन कॉम्प्लेक्स द्वारा भारत की विकास गाथा में किए जाने

वाले अपार योगदान को लेकर उत्साहित हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि सी-आईसीएम जैसी सुविधाएं सहयोग, नवाचार और समावेशिता की भावना को मूर्त रूप देती हैं, जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए राष्ट्र के दृष्टिकोण को परिभाषित करती हैं।

इस कार्यक्रम में नीति आयोग के सदस्य डॉ. वी.के. सारस्वत और डॉ. वी.के. पॉल, डीएसआईआर के सचिव और सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी और डॉ. राम विश्वकर्मा शामिल हुए। उद्घाटन समारोह में उद्योगजगत के दिग्गजों, नॉर्वे,

स्विटजरलैंड और जर्मनी के विदेशी प्रतिनिधियों, एमएसएमई, स्टार्ट-अप और भारत भर में सीएसआईआर प्रयोगशालाओं के 1,000 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।



सीएसआईआर-निस्पर द्वारा अपने चौथे स्थापना दिवस पर एसटीआईआईजी-2025 अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) द्वारा अपने चौथे स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रभावी अनुसंधान एवं विकास प्रशासन हेतु विज्ञान-प्रौद्योगिकी-नवाचार (एसटीआई) संकेतकों का संरेखण (एसटीआईआईजी-2025) विषय पर दो दिवसीय एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का किया गया।

इस अवसर पर प्रो. रंजना अग्रवाल, निदेशक, सीएसआईआर-निस्पर ने अपने उद्घाटन संबोधन में सभी प्रतिनिधियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और इस दो दिवसीय कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने सम्मेलन की रूपरेखा पर प्रकाश डाला और निस्पर (पूर्व में निस्केयर और



निस्टैड्स) के स्थापना दिवस के महत्व को रेखांकित किया, जिसकी संयुक्त विरासत 100 से अधिक वर्षों की है। उन्होंने सीएसआईआर-निस्पर के

इतिहास पर प्रकाश डाला, जिसका गठन 4 वर्ष पूर्व सीएसआईआर- निस्टैड्स और सीएसआईआर- निस्केयर) के विलय के बाद हुआ था।



प्रो. अग्रवाल ने सीएसआईआर-निस्पर को सीएसआईआर की सबसे युवा और सबसे गतिशील प्रयोगशालाओं में से एक बताया और विज्ञान संचार और एसटीआई नीति अनुसंधान के थिंक टैंक के रूप में इसकी भूमिका का उल्लेख किया। उन्होंने सीएसआईआर-निस्पर के प्रभागों और महत्वपूर्ण मिशनों जैसे स्वस्तिक, टीआरएल, नेत्रा, ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सृजन, आईएसएसएन जर्नल प्रकाशन प्रभाग आदि के बारे में भी विस्तारपूर्वक चर्चा की।

मुख्य अतिथि डॉ. सुमन कुमारी मिश्रा, पूर्व निदेशक, सीएसआईआर-सीजीसीआरआई, कोलकाता और एडजंक्ट प्रोफेसर, आईआईटी रोपड़ ने अपने संबोधन में विज्ञान प्रौद्योगिकी नवाचार (एसटीआई) संकेतकों के इस महत्वपूर्ण विषय पर सम्मेलन आयोजित करने के लिए निस्पर परिवार को धन्यवाद दिया। उन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सामाजिक विकास में

निस्पर की भूमिका पर भी प्रकाश डाला और दशकों से जनता तक विज्ञान की जानकारी पहुँचाने में निस्पर की लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं 'विज्ञान प्रगति' और 'साइंस रिपोर्टर' की भूमिका को याद किया। उन्होंने यह भी कहा कि "हमारे पास नवाचार के लिए पर्याप्त जगह है, और वैज्ञानिक जोखिम लेने के लिए तैयार हैं"।

तत्पश्चात प्रोफेसर सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं सूचना प्रणाली (आरआईएस) और सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि ने "विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार संकेतकों की पुनर्कल्पना: विकसित भारत 2047 के लिए विकास एजेंडा" विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि दुनिया बदल रही है और नई विकास प्राथमिकताएँ और लक्ष्य आवश्यक हैं, इसलिए हमें एसटीआई वैश्वीकरण के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्होंने प्रमुख आरएंडडी संकेतकों

के रूप में समावेश और संधारणीयता की भूमिका पर भी जोर दिया। उन्होंने एसटीआई के अनेक पहलुओं के साथ-साथ संकेतकों में नैतिकता, संधारणीय विकास लक्ष्य, हरित विकास, एमएसएमई कनेक्टिविटी, जन-कल्याण से जुड़े पैरामीटर, गुणात्मक पैरामीटर और अन्य की भूमिका को भी शामिल करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर प्रोफेसर आशुतोष शर्मा, अध्यक्ष, भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, इंस्टीट्यूट चेयर प्रोफेसर और सी. वी. शेषाद्रि चेयर प्रोफेसर, आईआईटी कानपुर एवं सम्मेलन के मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा, कि निस्पर की वर्षों की विशेषज्ञता ने विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान में उत्कृष्ट परिणाम दिए हैं। हमें ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है जो एसटीआई के माध्यम से समाज को प्रभावित करे और यह केवल नई तकनीकों के बारे में नहीं है, बल्कि समाज में विज्ञान के प्रति सांस्कृतिक व्यवहार के बारे में है,

इसलिए हमें इसे संबोधित करने के लिए विशिष्ट संकेतकों की भी आवश्यकता है। उन्होंने एआई और नई तकनीकों का प्रभाव भविष्य के लिए आवश्यक बताया और इस संबंध में उन्होंने विभिन्न मल्टीबिलियन उद्योगों के उदाहरण पर प्रकाश डाला जो इसलिए विफल हो गए क्योंकि वे डिजिटल फोटोग्राफी और पर्सनल कंप्यूटिंग जैसे विज्ञान की प्रगति के साथ नहीं जुड़ सके। डॉ. शर्मा ने अपने संबोधन में ज्ञान और बौद्धिक प्रज्ञा को मौद्रिक शब्दों या धन में बदलने पर भी जोर दिया।

तत्पश्चात मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मेलन की स्मारिका, तीन पुस्तकें, साइंस डिप्लोमैसी और जर्नल ऑफ इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट का एक विशेष अंक जारी किया जो सभी निस्पर द्वारा प्रकाशित हैं। उद्घाटन सम्बोधन के दौरान सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक और एसटीआईआईजी 2025 के सह-अध्यक्ष श्री मुकेश पुंड ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक और एसटीआईआईजी 2025 के अध्यक्ष प्रो. सुजीत भट्टाचार्य और मुख्य आयोजन टीम के अन्य सदस्यों ने इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए आभार व्यक्त किया।

एक विशेष अभियान "एक पेड़ माँ के नाम" के तहत वृक्षारोपण का भी आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने सीएसआईआर-निस्पर परिसर में वृक्षारोपण किया।

सम्मेलन के पहले दिन आठ अलग-अलग सत्र आयोजित किए गए, जिनमें कुछ समानांतर सत्र भी आयोजित किए गए।

प्रोफेसर अखिलेश गुप्ता, पूर्व सचिव, विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड (एसईआरबी) एवं वरिष्ठ सलाहकार, विज्ञान



और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार ने आर एंड डी गवर्नेंस के लिए एसटीआई संकेतकों पर सत्र- 1 का एक आकर्षक विषयगत अवलोकन प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक प्रो. सुजीत भट्टाचार्य जैसे प्रतिष्ठित वक्ता के व्यावहारिक मुख्य भाषण ने एसटीआई संकेतकों को दूरदर्शिता और शासन तंत्र के साथ संरेखित करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर प्रकाश डाला और प्रो. ओलेग जी गोलिचेंको, सीईएमआई (सीईएमआई), रूसी विज्ञान अकादमी और औद्योगिक संगठन विभाग, रूस ने "मेसोट्रेजेक्टरीज ऑफ टैक्नालॉजिकल डेवलपमेंट अलाइनिंग साइंस-टैक्नोलॉजी इनोवेशन इंडिकेटर्स" पर अपना मुख्य भाषण प्रस्तुत किया। भारत सरकार के नीति आयोग

में वरिष्ठ सलाहकार (विज्ञान और प्रौद्योगिकी) प्रो. विवेक कुमार सिंह ने "प्रदर्शन-आधारित अनुसंधान वित्त पोषण की ओर: संस्थागत विशेषज्ञता और विविधता मूल्यांकन" पर एक व्याख्यान दिया।

उन्होंने प्रदर्शन-आधारित वित्त पोषण मॉडल को चलाने में मजबूत एसटीआई संकेतकों के महत्व पर जोर दिया।

पोस्टर प्रस्तुतिकरण के दूसरे सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-निस्पर की मुख्य वैज्ञानिक डॉ. चारु वर्मा ने की और इस सत्र में कुल 17 पोस्टर प्रस्तुत किए गए।

तीसरा सत्र "आर एंड डी के सामाजिक प्रभाव का मापना" विषय पर था। इसकी अध्यक्षता आईएनएसए के कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर ब्रजेश पांडे ने की जिसमें

डॉ. इस्माएल राफोल्स, वरिष्ठ शोधकर्ता, लीडेन विश्वविद्यालय ने आमंत्रित व्याख्यान दिया और डॉ. शिव नारायण निषाद और अन्य ने सत्र के विषय के साथ शोधपत्र प्रस्तुत किए।

“आरएंडडी और समाज के लिए एसटीआई संकेतक” विषय पर चौथा पैनल चर्चा सत्र आयोजित किया गया, जिसमें रूसी विज्ञान अकादमी की डॉ. नादिया अशुलोवा, सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. नरेश कुमार और अन्य वैज्ञानिकों ने प्रस्तावित विषय पर चर्चा की। इस सत्र की अध्यक्षता आईआईटी दिल्ली के सीआरडीटी प्रमुख प्रोफेसर विवेक कुमार ने की और संचालन सीएसआईआर-निस्पर की सुश्री संध्या वाकडीकर और सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिक डॉ. एन. के. साहू ने किया।

पैनलिस्टों ने शोध मूल्यांकन के लिए नए प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन, केवल संगठनात्मक इकाइयों के बजाय व्यक्तिगत वैज्ञानिकों का मूल्यांकन करने की आवश्यकता और अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर एससीआई संकेतकों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता, विशेष रूप से एआई जैसी नई तकनीकों के उद्भव के साथ चर्चा की।

पांचवें सत्र में जिसका विषय “आरएंडडी और सोशल मीडिया का संयोजन” था, में डॉ. पिट पिचपन, डिजिटल सूचना अनुसंधान प्रयोगशाला, चेन्नई, भारत द्वारा आमंत्रित व्याख्यान दिया गया, जिसका विषय “शोध इकाइयों के बड़े बनाम छोटे समुच्चय को मापने का प्रभाव” था। इस सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत

किए गए जिसके बाद प्रश्नोत्तर हुए। इस सत्र की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सीएसएसपी प्रोफेसर माधव गोविंद ने की।

छठे सत्र में, अनुसंधान एवं विकास तथा सोशल मीडिया के लिए एसटीआई संकेतक विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा की अध्यक्षता दक्षिण कोरिया के हनबात राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर की-सोक क्वोन ने



की और इसका संचालन सीएसआईआर-निस्पर के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. योगेश सुमन ने किया। पैनल चर्चा के दौरान पैनलिस्ट जैसे डॉ. जगवीर सिंह, प्रमुख, आउटरीच और एसएजीई-एनसीएस पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय; डॉ. निशा मेंदीरता, कार्यकारी निदेशक, आईयूएसएसटीएफ; डॉ. (श्रीमती) रमा स्वामी बंसल, प्रमुख, आईएसटीएडी, सीएसआईआर-मुख्यालय, डॉ. गीता वाणी रायसम, प्रमुख, सीएसआईआर-एचआरडीजी; डॉ. रश्मि शर्मा, प्रमुख, एनसीएसटीसी प्रभाग, डीएसटी; डॉ. हेमंत कुमार, डीएसएसटीआईपी, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय; डॉ. अनुकृति शर्मा निदेशक, कौशल विकास केंद्र, कोटा विश्वविद्यालय, राजस्थान ने शोध, वित्तपोषण



STiG-2025

International Conference

Aligning Science-Technology-Innovation Indicators for Effective R&D Governance

SPEAKERS



Dr. Akhilesh Gupta
Chairperson
New Delhi, India



Prof. Ki-Sook Kwon
Professor
South Korea



Prof. (Dr.) Galichensko Oleg
OSR Member
Russia



Prof. Pranav Desai
Former Professor
New Delhi, India



Dr. Brajesh Pandey
Executive Director
New Delhi, India



Prof. Vivek Kumar Singh
Dean & Professor
New Delhi, India



Dr. Madhav Govind
Professor
New Delhi, India



Dr. Sujit Bhattacharya
Chief Scientist
New Delhi, India

14th - 15th January 2025

निर्णय, सामाजिक विकास और नीति निर्माण के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं में एल्मेंट्रिक्स के पक्ष और विपक्ष पर चर्चा की। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सोशल मीडिया महत्वपूर्ण पहलू और कनेक्ट करने का एक कुशल तरीका है, इसका

स्थानीय आवश्यकताओं के आधार पर शोध का मूल्यांकन किया जाना चाहिए और शोध गतिविधियों तक पहुँच को व्यापक बनाने के लिए भाषा-आधारित विज्ञान नीति बनाई जानी चाहिए।

सत्रों के दौरान, लगभग 13 प्रस्तुतियाँ दी गईं, जहाँ प्रमुख विशेषज्ञों ने अत्याधुनिक रणनीतियों और मीट्रिक्स पर चर्चा की, कि कैसे सोशल मीडिया और आरएंडडी एक साथ मिलकर समाज को विभिन्न तरीकों से प्रभावित कर सकते हैं। कुल मिलाकर, सम्मेलन के पहले दिन प्रतिभागियों में बहुत उत्साह और उमंग देखी गई, जो वक्ताओं और पैनलिस्टों के साथ उनकी सक्रिय भागीदारी और सम्बद्धता से स्पष्ट था।

सीएसआईआर-एनबीआरआई ने 71वें वार्षिक दिवस पर गुलाब एवं ग्लेडियोल्स प्रदर्शनी का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-एनबीआरआई) ने अपने 71वें वार्षिक दिवस के अवसर पर दो दिवसीय गुलाब एंड ग्लेडियोल्स प्रदर्शनी का आयोजन किया। सीएसआईआर-एनबीआरआई ने इसके साथ पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया। इस अवसर पर के.डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। उन्होंने प्रदर्शनी के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए। सीएसआईआर-एनबीआरआई के दूरस्थ अनुसंधान केंद्र बंधरा के अपने दौरे पर डॉ. कलैसेल्वी ने इंडिया हेरिटेज ट्रीज गार्डन का भी उद्घाटन किया। हेरिटेज ट्रीज गार्डन का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक महत्व है, इसका इस क्षेत्र के स्वतंत्रता आंदोलनों से भी गहरा नाता है, हेरिटेज पेड़ों को इन पेड़ों का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य से लगाया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनकी विरासत जारी रह सके। डॉ. कलैसेल्वी ने संस्थान में नव-विकसित सेंट्रल टिशू फैसिलिटी का उद्घाटन किया और उन्होंने इस अवसर पर वनस्पति उद्यान का भी दौरा किया तथा गुलदाउदी एनबीआरआई 'स्तुति', गुलदाउदी एनबीआरआई 'जगन्नाथ', गुलदाउदी



एनबीआरआई द्वारा विकसित '90k एसएनपी कॉटन चिप टेक' की एक तकनीक को मेसर्स आईएलएस लिमिटेड को हस्तांतरित किया गया। इसके अतिरिक्त जीनोमिक्स और जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों, अनुसंधान और नवाचार के विकास और प्रचार के लिए जीनोम फाउंडेशन, हैदराबाद के साथ एक समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किए गए।

एनबीआरआई 'सरस्वती', गुलदाउदी एनबीआरआई 'पद्मा' आदि पौधों की नई किस्मों को भी जारी किया।

उन्होंने इस अवसर पर अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ संस्थान के विभिन्न प्रकाशनों जैसे सीएसआईआर-एनबीआरआई कैलेंडर 2025; नीम की कृषि प्रौद्योगिकी पर एक पुस्तक; प्रोडक्ट कैटालॉग ऑफ डिहाईड्रेटेड फ्लोरल क्राफ्ट; सीएसआईआर-एनबीआरआई वार्षिक रिपोर्ट 2023-24 का विमोचन किया।

इस अवसर पर सीएसआईआर

इस अवसर पर महानिदेशक, सीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा दो नए बेलपत्र आधारित इत्र: फ्रोटेस-रुद्रा और फ्रोटेस-कुंभ भी लॉन्च किए गए। ये परफ्यूम बेलपत्र के आवश्यक तेल पर आधारित हैं। फ्रोटेस-रुद्रा की खुशबू बेलपत्र के पत्ते पर आधारित है और फ्रोटेस-कुंभ की खुशबू बेल के फल पर आधारित है।

सीएसआईआर-सीरी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण

सीएसआईआर-केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित छः उन्नत तकनीकों का विभिन्न उद्योगों को सफलतापूर्वक हस्तांतरण किया गया। यह प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम नई दिल्ली में डीएसआईआर (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग) के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित भव्य समारोह में माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री और सीएसआईआर के उपाध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. अजय सूद, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार और डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर और अन्य गणमान्य अतिथियों के अलावा डॉ. पी. सी. पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी, डॉ. साई कृष्णा, प्रभारी वैज्ञानिक, जयपुर परिसर, डॉ. मनीष मैथ्यू, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक, एवं प्रमुख, प्रौद्योगिकी व्यवसाय संवर्धन (टीबीडी) और डॉ. सत्यम श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहित अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

वैज्ञानिकों द्वारा विकसित 'आईओटी सक्षम एंडोस्कोप फॉर मिनिमल इनवेसिव सर्जरी' मेसर्स यलो मेडिप्लस प्राइवेट लिमिटेड को, 'आईओटी सक्षम फील्ड डिप्लॉयमेंट किट फॉर वाटर क्वालिटी टेस्टिंग' मेसर्स नागपुर पॉलिफिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड को, 'हाई इंटेन्सिटी लाइट सोर्स फॉर मिनिमल

इनवेसिव सर्जरी' मेसर्स डिवाइन मेडिटेक को, दुग्ध की मिलावट का पता लगाने के लिए विकसित 'क्षीर स्कैनर' और दूध के पोषक तत्वों की मात्रा की जानकारी देने वाली 'क्षीर एनालाइजर' टेक्नोलॉजी मेसर्स के. आर. इलेक्ट्रॉनिक्स, जयपुर को तथा 'अफोर्डेबल पीसीआर' सिडेक्स लेबोरेटरी सॉल्यूशन्स, चेन्नई को हस्तांतरित की गई।

इन तकनीकों में स्वास्थ्य, जल गुणवत्ता परीक्षण और खाद्य सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने की क्षमता है। उदाहरण के लिए, आईओटी सक्षम एंडोस्कोप फॉर मिनिमल इनवेसिव सर्जरी (एमआईएस) और हाई इंटेन्सिटी लाइट सोर्स वाली सर्जरी में दक्षता बढ़ाएंगे। क्षीर स्कैनर और क्षीर एनालाइजर दुग्ध गुणवत्ता परीक्षण के लिए प्रभावी उपकरण हैं, जो दूध में मिलावट

की त्वरित और सटीक पहचान करते हैं। वहीं, आईओटी सक्षम फील्ड डिप्लॉयमेंट किट पानी की गुणवत्ता के फील्ड परीक्षण के लिए और अफोर्डेबल पीसीआर जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान और चिकित्सा निदान में एक किफायती और उपयोगी तकनीक के रूप में उभर सकते हैं।

सीएसआईआर-सीरी का यह कदम भारत में उन्नत तकनीकी समाधानों के विकास और औद्योगिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा।

डॉ. कलैसेल्वी ने डॉ. पंचारिया को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए बधाई दी। उन्होंने संस्थान की इस उपलब्धि के लिए डॉ. पंचारिया ने भी सभी वैज्ञानिकों एवं उनकी टीमों को बधाई दी।



सीएसआईआर-चौथा पैराडाइम संस्थान द्वारा विश्व हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन



सीएसआईआर-4पीआई, बेंगलूर में दिनांक 10 जनवरी 2025 को 10.30 बजे डॉ. के. एस. याज्ञिक सम्मेलन कक्ष में विश्व हिन्दी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. हरीश बड़शिलिया, सलाहकार (प्र-प्रशा) एवं मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनएएल, बेंगलूर मुख्य अतिथि रहे और सम्मानीय अतिथि के रूप में श्री सुरेशचन्द्र शुक्ला, संपादक, स्पाइल-दर्पण, ओस्लो, नार्वे ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. श्रीदेवी जडे, निदेशक, सीएसआईआर-4पीआई, डॉ. हरीश बड़शिलिया, सलाहकार (प्र-प्रशा) एवं मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनएएल, बेंगलूर, डॉ. इम्तियाज़ अहमद परवेज, उपाध्यक्ष, राभाकास एवं मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-4पीआई और श्रीमती सुधा

रानी पी, प्रशासन नियंत्रक, श्रीमती निर्मला बाई एस. पी, हिन्दी अधिकारी, सीएसआईआर-4पीआई द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस अवसर पर श्री सुरेशचन्द्र शुक्ला, संपादक, स्पाइल-दर्पण, ओस्लो, नार्वे ऑनलाइन उपस्थित रहे।

दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत सीएसआईआर-4पीआई के संध्या, प्रिया, ऐश्वर्या, धन्या द्वारा प्रार्थना गीत प्रस्तुत किया गया। श्रीमती सुधा रानी पी, प्रशासन नियंत्रक, सीएसआईआर-4पीआई ने समारोह में उपस्थित मंचासीन गणमान्यों का, ओस्लो, नार्वे से ऑनलाइन द्वारा जुड़े श्री सुरेशचन्द्र शुक्लाजी का, समारोह में उपस्थित डॉ. गोपाल कृष्ण पात्रा, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-4पीआई एवं डॉ. अनिल कुमार वी, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-4पीआई और सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विश्व हिंदी

दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सभी का स्वागत किया और समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. हरीश बड़शिलिया, सलाहकार (प्र-प्रशा) एवं मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-एनएएल, बेंगलूर तथा सम्मानीय अतिथि श्री सुरेशचन्द्र शुक्ला, संपादक, स्पाइल-दर्पण, ओस्लो, नार्वे का संक्षिप्त परिचय दिया। विश्व हिन्दी दिवस समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. हरीश बड़शिलिया, “विश्व हिन्दी दिवस व्याख्यान” प्रस्तुत करते हुए हिन्दी की राजभाषा और विश्व भाषा बनने की यात्रा को अत्यंत सरल एवं संक्षिप्त रूप से बताया और सभी से अपील की कि राजभाषा हिन्दी को अपने शासकीय कार्य में अधिक से अधिक प्रयोग करें। समारोह के सम्मानीय अतिथि श्री सुरेशचन्द्र शुक्ला, जो ओस्लो, नार्वे से ऑनलाइन जुड़े थे, ने पूरे विश्व में हिन्दी के प्रयोग संबंधी विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

और उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा भारत की संस्कृति से जुड़ी है, जैसे-जैसे हिन्दी पूरे विश्व में फैलेगी, हिन्दी विश्व भाषा बनेगी। उन्होंने कहा कि अन्य देशों में बसे भारत के लोगों को जोड़ने की कड़ी है हिन्दी भाषा ही है। इस अवसर पर सीएसआईआर-4पीआई की निदेशक महोदया डॉ. श्रीदेवी जडे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभी को विश्व हिन्दी दिवस समारोह की शुभकामनाएं दी और विश्व हिन्दी दिवस के महत्व को बताते हुए कहा कि वैश्विक स्तर पर हिन्दी को बढ़ावा देना ही विश्व हिन्दी दिवस का लक्ष्य है और कहा कि एआई

के के दौर में भाषाओं को सीखना बहुत आसान होता जा रहा है, अतः हम सबका यह कर्तव्य है कि हम अधिक से अधिक भारतीय भाषाएँ सीखें और उनके विकास में योगदान दें। निदेशक महोदया ने सीएसआईआर-4पीआई के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निदेश दिया कि राजभाषा नीति के अनुसार शासकीय कार्यों में हिन्दी का प्रयोग अपेक्षा से अधिक किया जाए। समारोह के अंत में डॉ. इम्तियाज अहमद परवेज, उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यन्वयन समिति एवं मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-4पीआई ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए

कहा कि सीएसआईआर-4पीआई में हिन्दी का प्रयोग राजभाषा नियमानुसार किया जा रहा है। प्रशासनिक अधिकारी/कर्मचारी ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी एवं कर्मचारी भी अपने शासकीय कार्य में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग कर रहे हैं। सीएसआईआर-4पीआई के राजभाषा कार्यन्वयन समिति के उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि इन प्रयासों में और वृद्धि लाई जाए। श्रीमती निर्मला बाई एस पी, हिंदी अधिकारी ने विश्व हिंदी दिवस समारोह का संचालन किया।

डीआरडीओ-डीजीआई की टीम ने सीएसआईआर-सिंफर का दौरा किया

डीआरडीओ-रक्षा भूसूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीआरडीओ-डीजीआई), चंडीगढ़ की एक टीम ने हाल ही में रक्षा क्षेत्र में खनन प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग पर सहयोगपूर्ण संयुक्त अनुसंधान की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए सीएसआईआर-केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान, धनबाद का दौरा किया। प्रो. अरविंद कुमार मिश्रा, निदेशक, सीएसआईआर-केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान ने डीआरडीओ-डीजीआई टीम का स्वागत किया। उन्होंने डीआरडीओ-डीजीआई के साथ खनन प्रौद्योगिकियों की दिशा सहयोगपूर्ण शोध को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया। डीआरडीओ-डीजीआई की ओर से डॉ. पी. के. सत्यवल्ली, निदेशक, डीजीआई ने अपने प्रमुख वैज्ञानिकों की टीम के साथ जिसमें डॉ. आमोद कुमार, डॉ. पिनाकी रॉय चौधरी, डॉ. सुनील कुमार पुंडीर, डॉ. जिमी

कंसल शामिल थे। डीआरडीओ-डीजीआई की टीम ने सीएसआईआर-सीआईएमएफआर की विभिन्न अनुसंधान सुविधाओं विशेष रूप



से विस्फोटक एवं विस्फोटन प्रयोगशाला, रॉक उत्खनन इंजीनियरिंग अनुसंधान समूह, रॉक मैकेनिक्स प्रयोगशाला का दौरा किया। प्रो. अरविंद कुमार मिश्रा, निदेशक और वरिष्ठ वैज्ञानिकों की उनकी टीम जिसमें डॉ. जे. के. पांडे, डॉ. सी. सॉमलियाना, डॉ. मुरारी पी. रॉय,

डॉ. हर्ष के वर्मा और डॉ. विवेक के हिमांशु शामिल थे। दोनों टीमों ने खनन प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग संयुक्त शोधकार्य की इच्छा व्यक्त की और सीमावर्ती क्षेत्रों में नियंत्रित विस्फोट तकनीक और भूस्खलन प्रबंधन जैसे आपसी हित के क्षेत्रों की पहचान की। सीएसआईआर-सिंफर के निदेशक ने भी दौरे पर आई टीम को बताया कि सीआईएमएफआर के वैज्ञानिकों ने रक्षा अनुप्रयोग के लिए भूमिगत बुनियादी ढांचे के निर्माण के साथ-साथ रणनीतिक और बुनियादी ढांचे के क्षेत्रों में नियंत्रित विस्फोट तकनीकों के अनुप्रयोग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डीजीआई और सीएसआईआर-सीआईएमएफआर दोनों टीमों ने पहचाने गए क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई।

सीएसआईआर- सीएसआईआर-एनपीएल ने अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला (सीएसआईआर-एनपीएल), नई दिल्ली ने आज 4 जनवरी 2025 को अपना 79वां स्थापना दिवस मनाया। सीएसआईआर-एनपीएल वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), भारत सरकार के प्रमुख अनुसंधान संस्थानों में से एक है। सीएसआईआर-एनपीएल की आधारशिला दिवंगत प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने 4 जनवरी 1947 को रखी थी।

सीएसआईआर-एनपीएल भारत का राष्ट्रीय मेट्रोलॉजी संस्थान (एनएमआई) है और इसका प्रमुख अधिदेश राष्ट्रीय मानकों का विकास, उनका रखरखाव और प्रसार करना है। सीएसआईआर-एनपीएल उद्योगों और रणनीतिक क्षेत्रों के लिए उन्नत सामग्रियों के आधार पर नए माप मानकों और अत्याधुनिक तकनीकों का भी विकास कर रहा है और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

इस समारोह में प्रोफेसर वीझिनाथन कामकोटि, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मद्रास (आईआईटीएम), चेन्नई ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। सीएसआईआर-एनपीएल के निदेशक प्रोफेसर वेणुगोपाल अचंता ने समारोह को संबोधित करते हुए सीएसआईआर-एनपीएल की भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने सीएसआईआर-एनपीएल द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों, अनुसंधान, विकास गतिविधियों तथा शुरू की गई नई मिशन परियोजनाओं के बारे में उल्लेख किया। उन्होंने यह भी बताया कि सीएसआईआर-एनपीएल की पहुंच अब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ी है। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर-एनपीएल



स्टाफ एशिया पैसिफिक मेट्रोलॉजी प्रोग्राम (एपीएमपी) की तकनीकी समितियों में है और उन्हें नेतृत्वकारी भूमिकाएं तलाशने की जरूरत है।

सीएसआईआर-एनपीएल के 79वें स्थापना दिवस के अवसर पर "ग्लोसिंग इनटू मेट्रोलॉजी" विषय पर व्याख्यान देते हुए प्रोफेसर वीझिनाथन कामकोटि ने भारत सरकार के विकसित भारत मिशन के लिए मेट्रोलॉजी और मानकों के महत्व के बारे में उल्लेख किया और इसकी रणनीति बनाने के लिए अपने विचार साझा किए। उन्होंने क्वांटम मेट्रोलॉजी के लिए क्वांटम भौतिक मानकों, कंप्यूटिंग, संचार और क्वांटम कुंजी वितरण तथा सेमीकंडक्टर विनिर्माण सहित क्वांटम प्रौद्योगिकियों के बारे में चर्चा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मेट्रोलॉजी, भारत के लिए ज्ञान और प्रौद्योगिकी महाशक्ति बनने का मार्ग है। उन्होंने भारत में क्वांटम प्रौद्योगिकियों के लिए मेट्रोलॉजी, उनके प्रमाणीकरण के लिए अवसरों, मौजूदा समस्याओं, चुनौतियों और संभावित अनुसंधान एवं विकास क्षेत्रों को भी पेश किया। उन्होंने कहा कि सेमीकंडक्टर और क्वांटम प्रौद्योगिकियों के स्वदेशी विकास के लिए, सीएसआईआर-एनपीएल को एक बड़ी भूमिका

निभानी है और आईआईटी मद्रास इसमें एक भागीदार बनने की उम्मीद करता है।

इस कार्यक्रम के दौरान सीएसआईआर-एनपीएल ने शैक्षणिक और अनुसंधान सहयोग के लिए आईआईटी मद्रास के साथ और संयंत्र आधारित सामग्री के क्षेत्र में भारतीय निर्देशक द्रव्य (बीएनडी) (प्रमाणित संदर्भ सामग्री) के उत्पादन के लिए सीएसआईआर-सिमैप के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। सीएसआईआर-एनपीएल ने सीएसआईआर-एनपीएल की एक टीम द्वारा तैयार पाउडर एक्स-रे विवर्तन के लिए लाइन पोजिशन और लाइन शेप कैलिब्रेशन स्टैंडर्ड के लिए लैंथेनम हेक्साबोराइड पाउडर (बीएनडी-2025) के नए बीएनडी तथा सीएसआईआर-एनपीएल की एक टीम द्वारा संदर्भ सामग्री निर्माता (आरएमपी) राष्ट्रीय सीमेंट और भवन निर्माण सामग्री परिषद (एनसीसीबीएम), भारत सरकार के सहयोग से तैयार व्हाइट पोर्टलैंड सीमेंट स्टैंडर्ड (बीएनडी-5064) भी जारी किए। सीएसआईआर-एनपीएल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एस. आर. धकाते ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर-आईआईआईएम द्वारा गेंदा की खेती पर केंद्रित दो दिवसीय प्रशिक्षण सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर-समवेत औषध संस्थान (सीएसआईआर-आईआईआईएम), जम्मू द्वारा हाल ही में गेंदा उत्पादन और फसल प्रबंधन पर केंद्रित दो दिवसीय जागरूकता सह-प्रशिक्षण और बीज वितरण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। सीएसआईआर फलोरीकल्चर मिशन के तहत इस कार्यक्रम में जम्मू जिले के विभिन्न क्षेत्रों से 176 किसानों ने प्रतिभागिता की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आजीविका को बढ़ाने और भारत के कृषि परिदृश्य को बदलने के लिए वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक पुष्प कृषि प्रणाली को बढ़ावा देना था। सीएसआईआर-आईआईआईएम के निदेशक डॉ. जबीर अहमद ने मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने नवीन प्रौद्योगिकियों, इष्टतम भूमि उपयोग और बाजार संचालित खेती के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। डॉ. अहमद ने फसलों में विविधता लाने और आधुनिक तकनीकों को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, किसानों को आय और स्थिरता बढ़ाने के लिए नकदी फसल की खेती, वर्टिकल फार्मिंग और द्वितीयक स्तर पर प्रसंस्करण को चिन्हित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने खेती के तरीकों को आधुनिक बनाने, आय में सुधार लाने और

स्थायी रोजगार के अवसर पैदा करने में फलोरीकल्चर मिशन के प्रभाव की प्रशंसा की। इस अवसर पर फलोरीकल्चर मिशन के नोडल वैज्ञानिक डॉ. शाहिद रसूल ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस पहल के परिवर्तनकारी लक्ष्यों को रेखांकित किया। उन्होंने कृषि समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करते हुए भारत को फलोरीकल्चर में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने की मिशन की क्षमता पर प्रकाश डाला।

तत्पश्चात जम्मू-कश्मीर राज्य किसान सलाहकार बोर्ड के सदस्य तेजिंदर वजीर ने फलोरीकल्चर के माध्यम से किसान समृद्धि को बढ़ावा देने में मिशन की भूमिका की सराहना की। उन्होंने मूल्यवर्धित पुष्प उत्पाद बनाने के लिए कौशल-आधारित प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने पर जोर दिया और इस क्षेत्र को और अधिक समर्थन देने के लिए

बागवानी स्कूल की स्थापना की वकालत की।

कार्यक्रम में डॉ. शोएब मुबाशिर के नेतृत्व में तकनीकी सत्र और व्यावहारिक प्रदर्शन शामिल थे, जिन्होंने वैज्ञानिक खेती, नर्सरी उत्पादन और मैरीगोल्ड और अन्य फलोरीकल्चरल फसलों में रोग और कीट प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में डॉ. मलिका मजीद द्वारा मिशन की गतिविधियों का अवलोकन भी किया गया, जिन्होंने इस पहल के तहत सम्बद्ध कार्यक्षेत्रों पर जोर दिया।

कार्यक्रम का समापन सीएसआईआर-आईआईआईएम की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुफला गुप्ता द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी प्रतिभागियों और हितधारकों के प्रयासों की सराहना की।



सीएसआईआर-सिंफर ने देश में डोजर पुश माइनिंग विधि का पहला परीक्षण विस्फोट सफलतापूर्वक किया

सीएसआईआर-केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सिंफर) ने खनन उद्योग के लिए एक अभूतपूर्व उपलब्धि के रूप में देश में पहली बार उन्नत डिजिटल तकनीकों को एकीकृत करते हुए डोजर पुश माइनिंग विधि के लिए पहला परीक्षण विस्फोट सफलतापूर्वक पूरा किया। सीएसआईआर-सिंफर द्वारा विकसित इस अभिनव दृष्टिकोण का उद्देश्य खनन प्रक्रियाओं में सुरक्षा और परिचालन दक्षता को बढ़ाना है।

यह परीक्षण छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर के उदयपुर ब्लॉक में मेसर्स अदानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड द्वारा संचालित परसा ईस्ट और कांटा बासन (पीईकेबी) कोयला खदान में किया गया। यह सफल परीक्षण भारत की अग्रणी निजी खनन कंपनियों में से एक अदानी नेचुरल रिसोर्सेज द्वारा किया गया। इस अभिनव पद्धति से खनन कार्यों में क्रांतिकारी बदलाव आने की उम्मीद है, क्योंकि इसका ध्यान प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना और सुरक्षा प्रोटोकॉल में सुधार लाना है।

यह विकास-कार्य परसा ईस्ट और कांटा बासन, ओपनकास्ट कोयला खदान में डीप होल कास्ट ब्लास्टिंग के अभिकल्पन के लिए वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित धनबाद स्थित सीएसआईआर-सिंफर द्वारा प्रायोजित परियोजना का परिणाम है। इस परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य एक ऐसी विधि विकसित करना था जो न केवल खनन प्रक्रिया को अनुकूलित करे बल्कि यह भी सुनिश्चित करे कि कंपनी और फ्लायरॉक को



सुरक्षित सीमाओं के भीतर नियंत्रित किया जाए। दो साल के व्यापक विचार-विमर्श, तकनीकी मूल्यांकन और स्थानीय खनन स्थितियों के अनुकूलन के बाद, परियोजना ने भारतीय कोयला खदानों के लिए डोजर पुश माइनिंग विधि को सफलतापूर्वक तैयार किया है।

यह विकसित डोजर पुश माइनिंग खनन कार्यों के लिए मानव रहित, स्वचालित मशीनरी का उपयोग करके एक आदर्श बदलाव पेश करता है। इस परीक्षण में स्वचालित ड्रिल मशीन (मानव रहित) का उपयोग करके 108 सूरखों की ड्रिलिंग शामिल थी, इसके बाद 60 टन वृहद इमल्शन विस्फोटकों का उपयोग करके कास्ट/श्रो ब्लास्टिंग की गई। इसके अलावा, ब्लास्ट की गई सामग्री को विशेष रूप से अभिकल्पित किया गया था, तत्पश्चात इसे बड़े आकार की स्वचालित डोजर मशीन का

उपयोग करके डीकोल किए गए क्षेत्र में धकेला गया।

डोजर पुश माइनिंग विधि पारंपरिक ट्रक-शॉवल माइनिंग तकनीक या शॉवल-डंपर और ड्रैगलाइन विधियों के लिए एक व्यवहार्य विकल्प प्रदान करती है, इसके विशिष्ट उपयोग में तेजी से कोयला प्राप्त करने में सक्षम होने से दक्षता में सुधार, मानसून के मौसम जैसी प्रतिकूल मौसम स्थितियों के कारण होने वाली देरी को कम करना और अत्यधिक लागत प्रभावी, पारंपरिक तरीकों की तुलना में परिचालन लागत में अनुमानित 7-10 प्रतिशत की कमी इत्यादि शामिल है। इसके अतिरिक्त, यह ड्रैगलाइन मशीनों के उपयोग में सुधार करके और इकाई लागत को कम करके उत्पादकता को बढ़ाता है। इसके अलावा, डोजर पुश माइनिंग विधि का मानव रहित संचालन श्रमिक सुरक्षा को बहुत बढ़ाता है।

यह हस्तचालित (मैन्युअल) श्रम और पारंपरिक खनन तकनीकों से जुड़े जोखिमों को कम करता है।

इस विधि का पहला परीक्षण सीएसआईआर-सिंफर के निदेशक प्रोफेसर अरविंद कुमार मिश्रा और सीएसआईआर-सिंफर की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी टीम के नेतृत्व में किया गया, जिसमें डॉ. मुरारी पी. रॉय, डॉ. विवेक के. हिमांशु, श्री आर.एस. यादव, श्री सूरज कुमार और डॉ. आशीष के. विश्वकर्मा शामिल थे। पहले परीक्षण में सफल ड्रिलिंग और चार्जिंग संचालन, न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव के साथ सटीक विस्फोट और स्वचालित मशीनरी का उपयोग करके प्रभावी सामग्री का प्रदर्शन किया गया। दूसरे चरण में विस्फोट अभिकल्पन को और बेहतर

बनाने के लिए 8-10 अतिरिक्त परीक्षण विस्फोट आयोजित किए गए। इस विधि के लिए अंतिम सिफारिशें व्यापक कार्यान्वयन को अनुकूलित करने पर केंद्रित होंगी।

डोजर पुश माइनिंग विधि का सफल क्रियान्वयन भारतीय खनन उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। यह खनन कार्यों में सुरक्षा, दक्षता और लागत-प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाने की क्षमता को रेखांकित



करता है। यह सफलता खनन के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए तैयार है, जिससे वे अधिक कुशल, लागत-प्रभावी और सुरक्षित बनेंगे, जो अंततः उद्योग में एक नया मानक स्थापित करेगा।

सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा प्लांट टिशू कल्चर पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन

सीएसआईआर-हिमालयी जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश ने स्नातकोत्तर/पीएचडी अध्येता/औद्योगिक कर्मियों/उद्यमियों/केंद्र और राज्य सरकार के अधिकारियों को सशक्त बनाने के लिए 20 से 24 जनवरी 2025 के दौरान एक 5 दिवसीय “प्लांट टिशू कल्चर पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम” आयोजित किया, जिसे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार (उन्नत ई-एसडीपी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत) द्वारा वित्त पोषित किया गया था। इस कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से लगभग 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 20 जनवरी 2025 को उद्घाटन समारोह में (पद्म श्री) प्रो. प्रमोद टंडन, मानद वैज्ञानिक, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, भारत सहित



प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति देखी गई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्लांट टिशू कल्चर एसोसिएशन (भारत) के सचिव और एनईएचयू शिलांग के पूर्व कुलपति, प्रो. अश्विनी पारीक, कार्यकारी निदेशक,

एनएबीआई, मोहाली, पंजाब और डॉ. स्नेह एल. सिंगला-पारीक, ग्रुप लीडर, प्लांट स्ट्रेस बायोलॉजी, आईसीजीबी, नई दिल्ली, विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने भी शिरकत की।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के निदेशक डॉ. सुदेश कुमार यादव ने दर्शकों को प्लांट टिशू कल्चर और संस्थान में किए जाने वाले मूल्य संवर्धन से संबंधित अनुसंधान गतिविधियों से परिचित कराया। मुख्य अतिथि डॉ. स्नेह एल. सिंगला-पारीक ने भोजन की कमी की समस्या पर एक व्यावहारिक व्याख्यान दिया और बताया कि कैसे उन्नत आणविक

प्रौद्योगिकियां बढ़ती आबादी को खिलाने के लिए इन समस्याओं से निपटने में मदद कर सकती हैं। तत्पश्चात प्रो. प्रमोद टंडन ने बताया कि टिशू कल्चर तकनीक का उपयोग करके आप किस तरह से उद्यमिता विकसित कर सकते हैं। उन्होंने पिछली सफलता की कहानियों का उदाहरण दिया। कार्यक्रम में संस्थान के कर्मचारी और विद्वान शामिल हुए। प्रो. प्रमोद

टंडन, प्रो. अश्विनी पारीक और डॉ. स्नेह लता सिंगला-पारीक ने एक मेड माँ के नाम अभियान के तहत संस्थान में पौधारोपण किया। इस अवसर पर निदेशक सीएसआईआर-आईएचबीटी ने हिमाचल प्रदेश के नूरपुर जिले के कांगड़ा स्थित सरकारी आर्य डिग्री कॉलेज के साथ अनुसंधान और विकास के लिए समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान किया।

सीएसआईआर-नीरी ने पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य विषय पर एक संगोष्ठी-सह-पैनल चर्चा का आयोजन किया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी संस्थान (सीएसआईआर-नीरी) नागपुर ने पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य विषय पर एक संगोष्ठी-सह-पैनल चर्चा का आयोजन किया। इस संगोष्ठी में सीएसआईआर के पूर्व महानिदेशक डॉ. शेखर मांडे और एलआईटीयू नागपुर के कुलपति डॉ. अतुल वैद्य जैसे प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। डॉ. मांडे ने अपने सम्बोधन में पर्यावरण चुनौतियों से निपटने के लिए सीएसआईआर संस्थानों के बीच रणनीतिक सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया और जलवायु परिवर्तन और रोगाणुरोधी प्रतिरोध को कम करने में सूक्ष्मजीवों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सीएसआईआर-नीरी के निदेशक डॉ. सी. आनंदधर्मकृष्णन ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध के खतरनाक प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए, कहा कि इस मुद्दे को संबोधित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने बताया कि यह पानी और खाद्य श्रृंखला के माध्यम से फैल रहा है। इस संगोष्ठी में देश भर के विशेषज्ञ, जिनमें हाईमीडिया माइक्रोबायोलॉजी रिसर्च सेंटर के डॉ. हेमंत पुरोहित, सीएसआईआर-नीरी के



संधारणीय पर्यावरण प्रक्रिया के सह-अध्यक्ष डॉ. राजेश बिनीवाले, डेटा विश्लेषक डॉ. धनंजय राजे, सीएसआईआर-एनआईओ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. समीर दामारे और असम विश्वविद्यालय के डॉ. पीयूष पांडे शामिल थे। “एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध: एक गुप्त महामारी” विषय पर एक विचारोत्तेजक पैनल चर्चा आयोजित की गई जिसका संचालन डॉ. अत्याकपले, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-नीरी और अध्यक्ष, सतत पर्यावरण प्रक्रिया विभाग ने किया। डॉ. योगेश शौचे और डॉ.

नितिन कुरकुरे ने नगर निगम के सीवेज उपचार और एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध से निपटने की रणनीतियों पर अपने विचार साझा किए।

इस कार्यक्रम में सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और कृषि, फार्मास्यूटिकल्स और पशुधन जैसे क्षेत्रों में टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

सीएसआईआर-एनजीआरआई ने हैदराबाद चुंबकीय वेधशाला की हीरक जयंती मनाई।

सीएसआईआर- राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने हाल ही में हैदराबाद चुंबकीय वेधशाला (एचवाईबी) की हीरक जयंती मनाई। सीएसआईआर-एनजीआरआई अवसर पर भू-चुंबकत्व क्षेत्र के प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. मियोरा मांडिया और कैथी व्हेलर और अंतरिक्ष भू-विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. एनी कैज़ेनेवे ने 28-30 नवंबर, 2024 के दौरान का दौरा किया। इस उपलक्ष्य में डॉ. कुसुमिता अरोड़ा द्वारा एक वैज्ञानिक चर्चा बैठक का आयोजन किया गया, जहाँ सीएसआईआर-एनजीआरआई के वैज्ञानिकों ने भू-चुंबकीय वेधशाला की उपलब्धियों और विशेष कार्यों को प्रदर्शित किया, इस वेधशाला ने दिसंबर 2024 तक निरंतर डेटा अवलोकन के 60 वर्ष पूरे किए। पिछले 10 वर्ष उन्नत प्रसंस्करण और वास्तविक समय डेटा ट्रांसमिशन के साथ एनालॉग से डिजिटल डेटा में संक्रमण का युग था, जिसने इसे दुनिया की प्रमुख निम्न अक्षांश वेधशालाओं में से एक बना दिया। इस दौरान अंडमान-निकोबार से लक्षद्वीप, कन्याकुमारी से लद्दाख तक के रिमोट स्टेशन नेटवर्क को भी प्रस्तुत किया गया। सीएसआईआर-एनजीआरआई में विद्युतचुंबकीय भूभौतिकी पर एक वार्ता में, डॉ. अजय मांगलिक ने विद्युतचुंबकत्व के निष्क्रिय और सक्रिय तरीकों की विविध दिशाओं से



संस्थान द्वारा किए गए महत्वपूर्ण निष्कर्षों को प्रस्तुत किया। डॉ. सुभाष चंद्रा ने पैलियोचैनलों के लिए ईएम अध्ययनों पर एक प्रस्तुति दी। डॉ. एनी कैज़ेनेवे ने जलवायु परिवर्तन की निगरानी के लिए अंतरिक्ष अवलोकनों की भूमिका पर अत्याधुनिक व्याख्यान दिया। डॉ. मांडिया ने चुंबकीय माप के भविष्य और उनकी निरंतरता की आवश्यकता के बारे में बात की। डॉ. कैथी व्हेलर ने कोर फ्लो मॉडल और सतही अवलोकनों पर एक बहुत ही दिलचस्प व्याख्यान दिया। इसके बाद एक खुली चर्चा मंच का आयोजन किया गया, जहाँ डॉ. मांडिया और व्हेलर ने संस्थान के युवा शोधकर्ताओं के विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए। सीएसआईआर-एनजीआरआई के निदेशक का प्रतिनिधित्व करते हुए डॉ. अजय मांगलिक ने कार्यक्रम की

अध्यक्षता की। इस अवसर पर चुंबकीय वेधशाला के सेवानिवृत्त कर्मचारियों की विशेष रूप से सराहना की गई और उन्हें पूर्व निदेशकों डॉ. हर्ष गुप्ता और डॉ. वी.पी. डिमरी द्वारा सम्मानित किया गया। वैज्ञानिक चर्चाओं के बाद अगले दिन हैदराबाद और चौटुप्पल परिसरों में चुंबकीय वेधशालाओं का दौरा किया गया। भूचुंबकत्व में भविष्य के शोध दिशाओं पर छात्रों के साथ विस्तृत चर्चा की गई। डॉ. मांडिया ने चौटुप्पल परिसर में डेटा ट्रांसमिशन सेटअप की विशेष रूप से सराहना की। आगंतुकों को हाइड्रोलॉजी प्रायोगिक पार्क, प्रबंधित जल पुनर्भरण स्थल, भूतापीय वेधशाला भी दिखाई गई। इस प्रकार संस्थान के सभी सहयोगियों को धन्यवाद देते हुए यात्रा और इंटरैक्शन मीट का समापन हुआ।